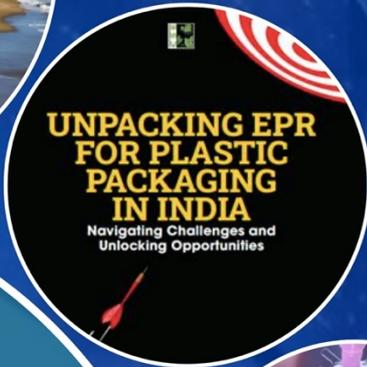


RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण



Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors
13. Index



By Ankit Avasthi Sir

सीओपी-16 में जैव विविधता पर 16वीं बैठक / 16th meeting on Biodiversity at COP-16

सीओपी-16 में जैव विविधता पर 16वीं बैठक के दौरान महत्वपूर्ण निष्कर्ष और प्रतिबद्धताएँ सामने आईं। कैली, कोलंबिया में आयोजित इस सम्मेलन में लगभग 190 देशों ने भाग लिया, जिसमें मुख्य फोकस 2022 के मॉन्ट्रियल सम्मेलन में तय किए गए *कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे (केएमजीबीएफ)* को आगे बढ़ाने और 2030 तक के जैव विविधता लक्ष्यों के कार्यान्वयन पर था।

सीओपी-16 के मुख्य निष्कर्ष:

- 30-बाई-30 समझौता:** इसका उद्देश्य 2030 तक विश्व की 30% भूमि और समुद्री क्षेत्रों को संरक्षित करना है। वर्तमान में, केवल 17% भूमि और 10% समुद्री क्षेत्र संरक्षित हैं।
- जैव विविधता संरक्षण के 23 कार्य-उन्मुख लक्ष्य:**
 - आक्रामक प्रजातियों का नियंत्रण:** 2030 तक आक्रामक विदेशी प्रजातियों के प्रसार को आधा करना और उनके प्रभावों को न्यूनतम करना।
 - प्रदूषण में कमी:** 2030 तक सभी स्रोतों से होने वाले प्रदूषण को सहनीय स्तर तक लाना।
 - लाभ-साझाकरण तंत्र:** आनुवंशिक संसाधनों और डिजिटल अनुक्रम जानकारी (DSI) के उपयोग से होने वाले लाभों को साझा करने के लिए एक प्रणाली का निर्माण करना।
 - विकास नीतियों में जैव विविधता का समावेश:** यह सुनिश्चित करना कि जैव विविधता संबंधी दृष्टिकोण राष्ट्रीय नीतियों, नियामक ढाँचों, और विकास योजनाओं में शामिल हों।
- वित्तीय प्रतिबद्धता:** इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए लगभग \$200 बिलियन की वार्षिक वित्तीय आवश्यकता है। हालांकि, अंतर्राष्ट्रीय हितधारकों ने इस राशि का एक छोटा हिस्सा ही देने का वादा किया है, जिससे लक्ष्यों को प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

प्रमुख निर्णय और चर्चाएँ:

- स्वदेशी समुदायों का समावेशन:** स्वदेशी समूहों के अद्वितीय ज्ञान और भूमिका को मान्यता देते हुए, एक सहायक निकाय की स्थापना की गई ताकि जैव विविधता संरक्षण में उनके योगदान को सुनिश्चित किया जा सके। इसका उद्देश्य संरक्षण प्रयासों में स्थानीय और स्वदेशी समुदायों की भागीदारी को बढ़ाना है।
- डिजिटल अनुक्रम सूचना (डीएसआई) समझौता:** डीएसआई से उत्पन्न उत्पादों से लाभ-साझाकरण की एक प्रणाली विकसित करने पर चर्चा हुई। इसके तहत आनुवंशिक सामग्री से विकसित उत्पादों जैसे दवाओं से होने वाले लाभों को न्यायसंगत रूप से वितरित करने पर जोर दिया गया। इस पर अभी अंतिम सहमति नहीं बनी है, लेकिन इसमें बहुपक्षीय समाधान की दिशा में प्रगति हुई है।
- अपनाए गए समझौते:** जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन के बीच संबंधों को मजबूत करना, जैव विविधता को मुख्यधारा में लाना, आक्रामक प्रजातियों का प्रबंधन, तथा कुनमिंग-मॉन्ट्रियल ढांचे (केएमजीबीएफ) के कार्यान्वयन के लिए तकनीकी सहायता जैसे मुद्दों पर समझौते किए गए।



भारत का योगदान:

भारत ने सीओपी-16 में सक्रिय रूप से भाग लिया और पर्यावरण राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह के नेतृत्व में जैव विविधता संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत किया। भारत के योगदान के मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

- बजट प्रतिबद्धता:** भारत ने 2025 से 2030 तक जैव विविधता और संरक्षण प्रयासों के लिए लगभग ₹81,664 करोड़ का बजट आवंटित करने की योजना बनाई है। 2018 से 2022 तक, भारत ने केंद्र सरकार के वित्तपोषण के माध्यम से 32,207 करोड़ रुपये संरक्षण प्रयासों पर खर्च किए।
- अंतर्राष्ट्रीय वित्त हेतु आह्वान:** भारत ने वैश्विक वित्तीय सहायता की आवश्यकता पर बल दिया ताकि केएमजीबीएफ के लक्ष्य 19 के अंतर्गत प्रतिवर्ष \$200 बिलियन जुटाने में सहायता मिल सके। इसमें अंतर्राष्ट्रीय वित्तपोषण के माध्यम से \$30 बिलियन का योगदान भी शामिल है।
- जैव विविधता पहल:**
 - भारत ने वैश्विक जैव विविधता संरक्षण में अपने योगदान को रेखांकित किया, जैसे अंतर्राष्ट्रीय बड़ी बिल्ली गठबंधन की स्थापना, जो पारिस्थितिकी तंत्र के स्वस्थ होने के संकेतक के रूप में कार्य करता है।
 - इसके अलावा, भारत ने अपने रामसर स्थलों की संख्या को 2014 में 26 से बढ़ाकर 85 कर दिया है और इसे 100 तक बढ़ाने की योजना है।



वैश्विक टीबी रिपोर्ट 2024 / Global TB Report 2024

हाल ही में विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने अपनी वैश्विक टीबी रिपोर्ट 2024 जारी की। रिपोर्ट में इस बात को स्वीकार किया गया है कि भारत ने 2015 से टीबी के छूटे हुए मामलों के अंतर को कम करने में जबरदस्त प्रगति की है।



क्षय रोग (टीबी) क्या है?

- क्षय रोग या टीबी (ट्यूबरकुलोसिस) एक संक्रामक बीमारी है जो *माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस* नामक बैक्टीरिया के कारण होती है।
- यह मुख्य रूप से फेफड़ों को प्रभावित करता है, लेकिन शरीर के अन्य अंगों में भी फैल सकता है।
- टीबी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तब फैलता है जब टीबी से संक्रमित व्यक्ति खांसता, छींकता या थूकता है, जिससे बैक्टीरिया युक्त सूक्ष्म बूंदें हवा में फैल जाती हैं। अन्य व्यक्ति इन दूषित बूंदों के संपर्क में आने पर संक्रमित हो सकते हैं।
- टीबी का उपचार संभव है, और इसके लिए एंटीबायोटिक्स का उपयोग किया जाता है, लेकिन इसके प्रभावी उपचार के लिए लंबी अवधि की चिकित्सा आवश्यक होती है। इसके रोकथाम के लिए टीबी के मामलों की शीघ्र पहचान और उनका उचित उपचार आवश्यक है।

टीबी के बारे में महत्वपूर्ण बिंदु:

- **प्रसार:** टीबी संक्रमित व्यक्ति की खांसी या छींक से फैलता है।
- **लक्षण:** लंबे समय तक खांसी, बुखार, वजन में कमी, और रात को पसीना आना।
- **रोकथाम और उपचार:** टीबी की रोकथाम के लिए नियमित जांच और बीसीजी टीका मददगार हो सकता है। इसका उपचार एंटीबायोटिक्स से किया जाता है।
- **प्रभाव:** अनुमान है कि दुनिया की एक चौथाई आबादी टीबी बैक्टीरिया से संक्रमित है, लेकिन उनमें से सभी लोग सक्रिय टीबी से प्रभावित नहीं होते।

निष्कर्ष: विश्व स्वास्थ्य संगठन की इस रिपोर्ट में भारत द्वारा टीबी की रोकथाम और उपचार में की गई प्रगति को सराहा गया है। हालाँकि, यह भी स्पष्ट किया गया है कि टीबी का वैश्विक बोझ अभी भी काफी अधिक है और इसे कम करने के लिए बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं, आर्थिक संसाधनों, और सामाजिक सहयोग की आवश्यकता है।

वैश्विक टीबी रिपोर्ट 2024 के मुख्य बिंदु:

- **नए टीबी मामलों में वृद्धि:** 2023 में 8.2 मिलियन नए टीबी मामलों का निदान हुआ, जो कि 1995 के बाद से सबसे अधिक है। 2022 में यह संख्या 7.5 मिलियन थी।
- **मृत्यु दर में गिरावट:** 2023 में टीबी से होने वाली मौतों की संख्या 1.25 मिलियन आंकी गई, जो कि 2022 की तुलना में कम है और कोविड-19 महामारी के चरम से भी कम है।
- **टीबी बोझ का वितरण:** 87% टीबी बोझ 30 निम्न और मध्यम आय वाले देशों में केंद्रित है, जिसमें प्रमुख पांच देश - भारत, इंडोनेशिया, चीन, फिलीपींस, और पाकिस्तान - 56% योगदान देते हैं।
- **भारत में प्रगति:**
 - भारत में 2015 के बाद से टीबी के छूटे हुए मामलों को पहचानने में सुधार हुआ है। 2023 में, भारत का उपचार कवरेज 89% तक पहुँच गया, जो 2015 में 72% था।
 - 2023 में प्रति लाख जनसंख्या पर टीबी मामलों की संख्या घटकर 195 रह गई, जो 2015 में 237 थी, इस प्रकार 17.7% की कमी आई है।
- **जोखिम कारक:** टीबी के नए मामलों में वृद्धि के प्रमुख कारण हैं कुपोषण, एचआईवी संक्रमण, शराब सेवन विकार, धूम्रपान और मधुमेह।



ट्रांसपोंडर क्या हैं? / What are transponders?

भारत सरकार ने समुद्र में मछुआरों की सुरक्षा और संरक्षा को बढ़ाने के लिए एक महत्वाकांक्षी योजना बनाई है। इस योजना के तहत, एक लाख मछली पकड़ने वाली नौकाओं पर स्वदेशी रूप से विकसित ट्रांसपोंडर लगाने का निर्णय लिया गया है। यह पहल दो-तरफ़ा संचार और सहायता प्रणाली को सशक्त बनाने का लक्ष्य रखती है।

ट्रांसपोंडर की परिभाषा:

ट्रांसपोंडर एक वायरलेस संचार, निगरानी, या नियंत्रण उपकरण है, जो आने वाले सिग्नल को ग्रहण करता है और स्वचालित रूप से प्रतिक्रिया देता है। इस शब्द का निर्माण ट्रांसमीटर और रिस्पॉन्डर के संयोजन से हुआ है। ट्रांसपोंडरों का उपयोग वस्तुओं के पता लगाने, पहचानने, और स्थान निर्धारण के लिए किया जाता है, और यह विभिन्न तकनीकों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जैसे कि संचार संकेतों को रिले करने में उपग्रहों का।

ट्रांसपोंडर का कार्यप्रणाली:

- ट्रांसपोंडर रेडियो आवृत्तियों का उपयोग करके कार्य करते हैं। जब एक सिग्नल भेजा जाता है—जिसे पूछताछकर्ता कहा जाता है—तो ट्रांसपोंडर एक पहचान संकेत लौटाकर प्रतिक्रिया करता है।
- इस प्रतिक्रिया में शामिल जानकारी, जैसे स्थान और पहचान कोड, ट्रांसपोंडर के प्रकार के अनुसार भिन्न होती है। ट्रांसपोंडर स्वचालित रूप से पूर्व निर्धारित आवृत्ति पर रेडियो सिग्नल भेजते हैं।
- उदाहरण के लिए, एक हवाई यातायात नियंत्रक एक पूछताछ संकेत भेज सकता है और एक विमान से पहचान संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकता है, जिससे नियंत्रण टॉवर को आसपास के हवाई क्षेत्र में विमानों को ट्रैक करने में मदद मिलती है।

ट्रांसपोंडर के अनुप्रयोग: ट्रांसपोंडर का उपयोग कई तकनीकों में किया जाता है, जैसे:

- विमान पहचान
- संचार उपग्रह
- वाहन की चाबियाँ
- ऑप्टिकल संचार
- सोनार
- इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह प्रणाली
- मोटर स्पोर्ट्स के लिए लैप टाइमिंग और टायर पहचान
- क्रेडिट कार्ड पर चुंबकीय लेबल



सोनार: गहराई में वस्तुओं का पता लगाने की तकनीक

सोनार (साउंड नेविगेशन एंड रेंजिंग) एक ऐसी तकनीक है, जिसका उपयोग पानी में और समुद्र तल के भीतर वस्तुओं का पता लगाने के लिए किया जाता है। इसके दो मुख्य प्रकार हैं: निष्क्रिय और सक्रिय।

निष्क्रिय और सक्रिय सोनार

- निष्क्रिय सोनार:** यह पानी के नीचे की आवाज़ों को सुनता है।
- सक्रिय सोनार:** यह ध्वनि उत्सर्जित करता है और प्रतिध्वनि का उपयोग कर पर्यावरण में वस्तुओं का पता लगाने, उन्हें पहचानने और वर्गीकृत करने के लिए कार्य करता है। उदाहरण के लिए, सक्रिय सोनार का उपयोग यह निर्धारित करने के लिए किया जाता है कि कोई वस्तु पनडुब्बी, चट्टान, मछलियों का झुंड, या ढेल है।

हालांकि, सक्रिय सोनार सिस्टम के समुद्री जानवरों पर प्रभाव को लेकर चिंताएँ भी हैं, जिसे ध्यान में रखना आवश्यक है।



भारतीय हरित भवन परिषद (IGBC) / Indian Green Building Council (IGBC)

हाल ही में हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री ने घोषणा की है कि **दुर्गेश अरण्य प्राणी उद्यान** को **भारतीय ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल (IGBC)** से प्रमाणन प्राप्त होगा, जिससे यह टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल बुनियादी ढांचे के लिए प्रमाणन पाने वाला **भारत का पहला चिड़ियाघर** बन जाएगा। यह पहल **पर्यावरणीय स्थिरता** को बढ़ावा देने के साथ-साथ पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारतीय हरित भवन परिषद (IGBC) के बारे में:

भारतीय हरित भवन परिषद का गठन वर्ष **2001** में **भारतीय उद्योग परिसंघ (CII)** के हिस्से के रूप में किया गया था। यह परिषद भारत की अग्रणी **प्रमाणन संस्था** है, जो टिकाऊ भवनों के विकास के लिए विभिन्न सेवाएं प्रदान करती है। इसकी प्रमुख सेवाओं में शामिल हैं:

- **हरित भवन रेटिंग कार्यक्रम:** नए हरित भवनों के लिए मानकों का निर्माण।
- **प्रमाणन सेवाएं:** पर्यावरण अनुकूलता के मानकों के अनुसार प्रमाणन जारी करना।
- **हरित भवन प्रशिक्षण:** हरित भवनों के निर्माण और रखरखाव के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम।

परिषद का **मुख्यालय हैदराबाद** में स्थित है और यह हर साल **ग्रीन बिल्डिंग कांग्रेस** नामक कार्यक्रम का आयोजन करती है, जिसमें हरित भवनों और टिकाऊ निर्माण के बारे में विचार-विमर्श किया जाता है। IGBC उन पांच देशों में से एक है, जो **विश्व ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल** के बोर्ड में शामिल हैं और **सीओपी** जैसे वैश्विक मंचों पर पर्यावरणीय मुद्दों पर चर्चा करते हैं।

IGBC रेटिंग की पर्यावरणीय श्रेणियाँ:

IGBC द्वारा प्रदान की जाने वाली **रेटिंग** प्रणाली छह प्रमुख श्रेणियों पर आधारित है:

1. **टिकाऊ स्टेशन सुविधा**
2. **स्वास्थ्य, स्वच्छता और सफाई**
3. **ऊर्जा दक्षता**
4. **जल दक्षता**
5. **स्मार्ट और हरित पहल**
6. **नवाचार और विकास**

ये श्रेणियाँ भवनों की **पर्यावरणीय स्थिरता** और **सामाजिक लाभ** को बढ़ावा देती हैं।

भारतीय उद्योग परिसंघ (CII): एक परिचय

भारतीय उद्योग परिसंघ (CII) एक **गैर-सरकारी** और **गैर-लाभकारी** संगठन है, जो निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों के **लगभग 9,000 सदस्यों** का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें **एसएमई** और **एमएनसी** शामिल हैं। यह विभिन्न सलाहकार और परामर्श प्रक्रियाओं के माध्यम से **उद्योग, सरकार और नागरिक समाज** के साथ साझेदारी करके भारत के विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाता और बनाए रखता है।



Indian Green Building Council
Greening India since 2001

दुर्गेश अरण्य प्राणी उद्यान: पर्यावरण अनुकूल पर्यटन का आदर्श:

- **स्थान:** यह प्राणी उद्यान **हिमाचल प्रदेश** के **कांगड़ा** जिले के **देहरा** विधानसभा क्षेत्र में **बनरवंडी** में स्थित है।
- **केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण (CZA)** ने पार्क में **34 बाड़ों** को मंजूरी दी है, जहाँ **73 पशु प्रजातियाँ** रखी जाएंगी, जैसे:

- **एशियाई शेर**
- **हॉग डियर**
- **मगरमच्छ**
- **मॉनिटर छिपकली**
- **घड़ियाल**
- **विभिन्न पक्षी प्रजातियाँ**

- यह परियोजना राज्य सरकार के **इको-पर्यटन** और **सतत विकास** को बढ़ावा देने के उद्देश्य के अनुरूप है। कांगड़ा क्षेत्र को "पर्यटन राजधानी" के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से, इस प्राणी उद्यान को हरित भवन प्रमाणन देना, पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।



भारत में महिला श्रम बल की भागीदारी / Female Labour Force Participation in India

भारत में महिला श्रम बल की भागीदारी एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन गई है, खासकर अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की हालिया रिपोर्ट के बाद। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि भारतीय महिलाओं पर देखभाल संबंधी अत्यधिक जिम्मेदारियां उनकी श्रम बल भागीदारी को बाधित कर रही हैं।

महिला श्रम बल भागीदारी की स्थिति:

- श्रम बल से बाहर महिलाएं:** भारत में 53% महिलाएं कार्यबल से बाहर हैं, जबकि पुरुषों में यह दर मात्र 1.1% है। इस अंतर का मुख्य कारण महिलाओं द्वारा किए जाने वाले अवैतनिक देखभाल और घरेलू कार्य हैं।
- अवैतनिक घरेलू कार्य:** भारत के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) 2023-24 के अनुसार, 36.7% महिलाएं और 19.4% पुरुष अवैतनिक घरेलू कार्य में संलग्न हैं।
- घरेलू कार्यों में लैंगिक असमानताएं:** राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO) के समय उपयोग सर्वेक्षण 2019 के अनुसार, 81% भारतीय महिलाएं प्रतिदिन पांच घंटे से अधिक समय घरेलू गतिविधियों में बिताती हैं, जबकि पुरुषों की तुलना में यह आंकड़ा काफी अधिक है।
- देखभाल कार्यों में असमानता:** देखभाल कार्यों में, 26.2% महिलाएं प्रतिदिन दो घंटे से अधिक समय देखभाल में बिताती हैं, जबकि केवल 12.4% पुरुष ऐसा करते हैं।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखभाल जिम्मेदारियों का प्रभाव:

- वैश्विक श्रम बल से बाहर महिलाएं:** 2023 में वैश्विक स्तर पर 748 मिलियन लोग देखभाल कर्तव्यों के कारण श्रम बल से बाहर हैं, जिनमें से 708 मिलियन महिलाएं हैं।
- क्षेत्रीय अंतर:** उत्तरी अफ्रीका, अरब राज्यों, और एशिया-प्रशांत क्षेत्र में देखभाल जिम्मेदारियों के कारण श्रम बल से बाहर महिलाओं की संख्या सबसे अधिक है। ईरान, मिस्र, जॉर्डन और भारत में भी देखभाल जिम्मेदारियों से बंधी महिलाओं की संख्या अधिक है।
- प्रेरक मॉडल:** बेलारूस, बुल्गारिया, और स्वीडन जैसे देश प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) में निवेश करते हैं, जिससे महिला श्रम भागीदारी दर में वृद्धि होती है। इन देशों में महिलाओं के कार्यबल से बाहर होने की दर 10% से भी कम है।

आगे का रास्ता:

- देखभाल अर्थव्यवस्था में निवेश:** आईएलओ की सिफारिशों के अनुसार, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) में निवेश से महिलाओं की देखभाल जिम्मेदारियों में कमी आएगी। इससे महिलाएं कार्यबल में समय और ऊर्जा दे पाएंगी, जिससे उनकी भागीदारी बढ़ेगी।
- महिलाओं के लिए शिक्षा और कौशल विकास:** महिलाओं को विशेष रूप से रोजगार योग्य बनाने के लिए शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में निवेश जरूरी है। इसके लिए महिलाओं को व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी प्रशिक्षण और डिजिटल कौशल में सक्षम बनाना आवश्यक है।
- सुरक्षित कार्यस्थल और आवश्यक बुनियादी ढांचे का विकास:** महिलाओं के लिए कार्यस्थलों पर सुरक्षित वातावरण और बच्चा देखभाल जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराना आवश्यक है। इससे महिलाओं को अपने पेशेवर जीवन को प्राथमिकता देने में सहाय्य होगी।



प्रमुख बाधाएं:

- शैक्षणिक योग्यता में कमी:** महिलाओं की शिक्षा के स्तर में अंतर उनकी रोजगार संभावनाओं को सीमित करता है। शिक्षा तक सीमित पहुंच, विशेषकर ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में, महिलाओं को कुशल श्रम बल में शामिल होने से रोकती है।
- सीमित रोजगार के अवसर:** महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर सीमित हैं, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहां पारंपरिक भूमिका की अपेक्षा अधिक होती है। कई उद्योगों और क्षेत्रों में महिलाओं के लिए काम का अभाव उनकी श्रम भागीदारी में बाधा उत्पन्न करता है।
- बुनियादी ढांचे की अपर्याप्तता:** महिलाओं के लिए सुरक्षित कार्यस्थल, परिवहन सुविधाओं की कमी, और कार्यस्थलों पर बच्चा देखभाल सुविधाओं का अभाव भी महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी को सीमित करता है।
- सांस्कृतिक और सामाजिक मानदंड:** सांस्कृतिक रूप से महिलाओं पर देखभाल और घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी होती है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जिससे उन्हें श्रम बाजार में स्वतंत्र रूप से प्रवेश करने में बाधा आती है।

भारत में आर्थिक विकास के बीच ग्रामीण मजदूरी की स्थिरता / Rural wages stagnate amid economic growth in India

भारत में आर्थिक विकास के बीच ग्रामीण मजदूरी की स्थिरता एक महत्वपूर्ण विरोधाभास है, जो कि देश में समावेशी विकास और ग्रामीण समृद्धि के लक्ष्यों को चुनौती देता है। पिछले कुछ वर्षों में अर्थव्यवस्था की प्रभावशाली वृद्धि दर के बावजूद, ग्रामीण मजदूरी विशेष रूप से वास्तविक रूप में स्थिर बनी हुई है। इसके कई कारण हैं और सरकार ने इसे कम करने के लिए कई प्रयास किए हैं, फिर भी दीर्घकालिक समाधान हेतु अतिरिक्त नीतिगत कदमों की आवश्यकता है।

ग्रामीण मजदूरी बनाम आर्थिक विकास: अवलोकन

- **आर्थिक विकास दर:** भारत की जीडीपी 2019-20 से 2023-24 तक औसतन 4.6% और पिछले तीन वर्षों में 7.8% की दर से बढ़ी है। कृषि क्षेत्र की औसत वृद्धि दर भी 3.6% और 4.2% के बीच रही है।
- **मजदूरी वृद्धि डेटा:** श्रम ब्यूरो के अनुसार, 2019 से 2024 तक ग्रामीण मजदूरी में नाममात्र वृद्धि 5.2% सालाना रही, लेकिन मुद्रास्फीति समायोजन के बाद यह वास्तविक वृद्धि -0.4% रही।

ग्रामीण मजदूरी में स्थिरता के कारण:

1. **महिला श्रम बल भागीदारी में वृद्धि:**
 - **कार्यबल में अधिक महिलाओं की भागीदारी:** महिला श्रम बल भागीदारी दर में वृद्धि हुई है, जो 2018-19 में 24.5% से बढ़कर 2023-24 में 41.7% हो गई है, और ग्रामीण महिला श्रम भागीदारी 47.6% हो गई है।
 - **आपूर्ति में बढ़ोतरी से मजदूरी पर दबाव:** महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के कारण श्रमिकों की आपूर्ति बढ़ी है, जिससे मांग और आपूर्ति के असंतुलन ने मजदूरी दर पर दबाव बनाया है।
2. **श्रम मांग में बदलाव:**
 - **औद्योगिक क्षेत्र की सीमित मांग:** भारत में आर्थिक विकास अधिकतर पूंजी-प्रधान क्षेत्रों की ओर झुका है, जिनमें श्रम की आवश्यकता कम होती है। इसका प्रभाव यह है कि ग्रामीण क्षेत्रों में मजदूरी दर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
 - **कृषि क्षेत्र पर निर्भरता:** अधिकतर ग्रामीण श्रमिक कृषि कार्य में संलग्न हैं, जहाँ उत्पादकता पहले से ही कम है। इससे अधिक श्रम आपूर्ति के कारण ग्रामीण मजदूरी वृद्धि सीमित हो जाती है।
3. **मुद्रास्फीति का प्रभाव:** नाममात्र मजदूरी दरों में वृद्धि होने के बावजूद मुद्रास्फीति समायोजन के बाद वास्तविक मजदूरी में बढ़ोतरी न के बराबर रही है।

निष्कर्ष: भारत के आर्थिक विकास के लाभ ग्रामीण मजदूरी में वृद्धि के रूप में नहीं पहुँच पा रहे हैं, जिससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच आय असमानता और गहरी होती जा रही है। सरकार की योजनाओं से अल्पकालिक राहत तो मिल रही है, लेकिन दीर्घकालिक सुधार के लिए श्रम मांग के असंतुलन को हल करने, ग्रामीण श्रमिकों की उत्पादकता बढ़ाने, और कौशल विकास को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।



समाधान के लिए उठाए गए कदम:

1. **आय हस्तांतरण योजनाएं:**
 - **राज्य सरकार की पहलें:** महाराष्ट्र की लड़की बहिन योजना जैसी योजनाएं महिलाओं को लक्षित करते हुए उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं, जो कि उनकी आय में सहायता करती हैं।
 - **केंद्र सरकार की पहलें:** केंद्र सरकार ने किसान परिवारों को पीएम-किसान योजना के तहत वार्षिक ₹6,000 की सहायता और पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत मुफ्त अनाज जैसी योजनाओं से सहायता प्रदान की है।
2. **कौशल विकास एवं रोजगार सृजन:**
 - **कौशल प्रशिक्षण और शिक्षा:** ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमिकों को औद्योगिक क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए कौशल विकास की आवश्यकता है।
 - **उद्यमिता को बढ़ावा देना:** ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता और MSME सेक्टर के माध्यम से रोजगार के नए अवसर सृजित किए जा सकते हैं।
3. **कृषि क्षेत्र का आधुनिकीकरण:** कृषि को अधिक उत्पादक बनाने से ग्रामीण मजदूरी वृद्धि में सुधार हो सकता है, जिससे कृषि आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

CSE द्वारा EPR पर रिपोर्ट Report on EPR by CSE

विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र ने अपनी रिपोर्ट में प्लास्टिक पैकेजिंग के लिए विस्तारित उत्पादक उत्तरदायित्व (EPR) पर प्रकाश डाला है। रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2060 तक वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक कचरे की मात्रा तीन गुना हो जाएगी, जिसमें से केवल 20% का ही पुनर्चक्रण हो सकेगा। ऐसी स्थिति में, EPR एक प्रभावी नीति सिद्धांत के रूप में उभरकर प्लास्टिक संकट से निपटने का प्रयास कर रहा है।

प्लास्टिक पैकेजिंग के लिए EPR:

- **उत्पत्ति:** प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के अंतर्गत EPR की शुरुआत की गई, और 2022 में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा इसके विस्तारित दिशानिर्देश अधिसूचित किए गए।
- **कार्यकाल:** इसे वित्तीय वर्ष 2027-28 तक कार्यान्वित किया जाएगा।
- **पीआईबीओ:** इसमें 'प्रदूषक' के रूप में उत्पादक, आयातक, ब्रांड मालिक और निर्माता (पीआईबीओ) शामिल हैं। इन्हें बाजार में लाई गई 100% प्लास्टिक पैकेजिंग को एकत्र करने की जिम्मेदारी दी गई है।
- **EPR व्यवस्था:** पीआईबीओ को EPR प्रमाणपत्र खरीदने होंगे जो पुनर्चक्रण और निपटान के लिए प्रमाणित प्रक्रिया के रूप में कार्य करते हैं।

प्लास्टिक के लिए वर्तमान EPR व्यवस्था में चुनौतियाँ:

1. **आयातकों की निगरानी की कमी:** बड़ी संख्या में आयातक बिना किसी निगरानी या विनियमन के कार्य कर रहे हैं।
2. **प्लास्टिक कचरे का वर्गीकरण:** पैकेजिंग और गैर-पैकेजिंग प्लास्टिक कचरे में अंतर कर पाना मुश्किल है।
3. **फर्जी प्रमाणपत्र:** कुछ पीडब्ल्यूपी (प्लास्टिक अपशिष्ट प्रसंस्करणकर्ता) फर्जी EPR प्रमाणपत्र जारी कर रहे हैं।

सिफारिशें:

- EPR के उचित मूल्य निर्धारण की स्थापना।
- फर्जी EPR प्रमाणपत्रों का अमान्यकरण।
- अनौपचारिक क्षेत्र को EPR दिशानिर्देशों में शामिल करना।



EPR के बारे में:

परिभाषा: EPR एक नीतिगत सिद्धांत है जो उत्पादकों को उनके उत्पादों के संपूर्ण जीवनचक्र के लिए जवाबदेह बनाता है, विशेष रूप से वापस लेने, पुनर्चक्रण और अंतिम निपटान चरणों के दौरान।

EPR के प्रमुख तत्व:

- **प्रदूषक भुगतान सिद्धांत:** प्रदूषक को उनके द्वारा उत्पन्न कचरे के लिए उत्तरदायी ठहराता है।
- **अपशिष्ट न्यूनीकरण:** कचरे को कम करने पर बल देता है।
- **जीवनचक्र दृष्टिकोण:** उत्पाद के संपूर्ण जीवनचक्र का ध्यान रखता है।
- **कार्यान्वयन एजेंसियाँ:** उत्पादक उत्तरदायित्व संगठन (PRO) तीसरी पक्ष की एजेंसियाँ हैं, जो प्रदूषकों को EPR अनुपालन में सहायता करती हैं।

तमिलनाडु ने हीटवेव को राज्य-विशिष्ट आपदा घोषित किया Tamil Nadu declares heatwave as state-specific disaster

हाल ही में तमिलनाडु सरकार ने बढ़ते तापमान और हीटवेव की घटनाओं को देखते हुए हीटवेव को राज्य-विशिष्ट आपदा घोषित किया है। इसका उद्देश्य प्रभावित लोगों के लिए राहत उपाय प्रदान करना और हीटवेव से होने वाली मौतों के लिए मुआवजा देना है। राज्य आपदा प्रतिक्रिया कोष से धन आवंटित करके गर्मी प्रबंधन के लिए त्वरित कदम भी उठाए जाएंगे।



भारत में गर्मी की लहरों का बढ़ता प्रभाव:

विश्व मौसम विज्ञान संगठन के अनुसार, 2023 अब तक का सबसे गर्म वर्ष है। इसके पीछे जलवायु परिवर्तन एक प्रमुख कारण है, जिसे आईपीसीसी की छठी मूल्यांकन रिपोर्ट में भी रेखांकित किया गया है। भारत में गर्मी की लहरों की आवृत्ति और गंभीरता में वृद्धि देखी जा रही है, जिससे स्वास्थ्य पर गहरा असर हो रहा है। कुछ उल्लेखनीय उदाहरण हैं:

- **1998:** दो सप्ताह तक चली भयंकर गर्मी, 50 वर्षों में सबसे खराब।
- **1999:** अप्रैल में अभूतपूर्व गर्मी, जब तापमान लगातार 14 दिनों से अधिक 40°C रहा।
- **2003:** आंध्र प्रदेश में भीषण गर्मी के कारण 3,000 से अधिक मौतें।
- **2010:** अहमदाबाद में भीषण गर्मी से 1,300 लोगों की मृत्यु।
- **2016, 2018, 2019, और 2023:** पूरे भारत में अत्यधिक गर्मी की घटनाएँ।

2024 में भी अत्यधिक गर्मी का पूर्वानुमान है, खासकर राजस्थान के चुरु में मई में तापमान 50.5°C तक पहुँचने की संभावना है।

हीटवेव का परिचय:

हीटवेव असामान्य रूप से उच्च तापमान की अवधि को दर्शाती है, जो सामान्य अधिकतम तापमान से अधिक होती है। भारत में हीटवेव आमतौर पर मार्च से जून तक होती है। मैदानों में 40°C या अधिक और पहाड़ी क्षेत्रों में 30°C या अधिक तापमान को हीटवेव माना जाता है। अगर वास्तविक अधिकतम तापमान 45°C से ऊपर हो तो इसे गंभीर हीटवेव घोषित किया जाता है।

अत्यधिक गर्मी का स्वास्थ्य पर प्रभाव:

- गर्मी में तेजी से वृद्धि शरीर के तापमान नियंत्रण को प्रभावित करती है।
- इसके परिणामस्वरूप तापजन्य ऐंठन, तापजन्य थकावट, तापघात, और अतिताप जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। लं
- बे समय तक अत्यधिक गर्मी का संपर्क गुर्दे, हृदय और फेफड़ों की बीमारियों का खतरा भी बढ़ाता है।
- विशेष रूप से कमजोर समूहों जैसे कि बच्चे, बुजुर्ग, गर्भवती महिलाएँ, और बाहर काम करने वाले लोग इस खतरे का सामना अधिक करते हैं।

तटीय क्षेत्र प्रबंधन योजना (CZMP) तटीय क्षेत्र प्रबंधन योजना (CZMP)

हाल ही में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने केरल के 10 तटीय जिलों के तटीय क्षेत्र प्रबंधन योजना (Coastal Zone Management Plan - CZMP) को मंजूरी दी है, जिसमें कासरगोड, कन्नूर, कोझीकोड, मलप्पुरम, त्रिशूर, और एर्नाकुलम जैसे जिले शामिल हैं। इस योजना का उद्देश्य तटीय क्षेत्रों में मानवीय गतिविधियों को सुनियोजित ढंग से प्रबंधित करना और उनकी पारिस्थितिकी को संरक्षित रखना है।

तटीय क्षेत्र प्रबंधन योजना (CZMP) के प्रमुख घटक:

- जोनिंग:** CZMP तटीय क्षेत्रों को विभिन्न जोनों में विभाजित करता है, जैसे नो डेवलपमेंट ज़ोन (NDZ) और तटीय विनियमन ज़ोन (CRZ)।
- जन भागीदारी:** इसमें स्थानीय समुदायों की राय और चिंताओं का ध्यान रखा जाता है ताकि योजना को अधिक प्रभावी बनाया जा सके।
- तटीय विनियमन क्षेत्र (CRZ) अधिसूचना 2019:** इस अधिसूचना को लागू करने के लिए राज्यों को CZMP की मंजूरी अनिवार्य होती है, ताकि इसके तहत रियायती मानदंडों का लाभ उठाया जा सके।

तटीय विनियमन क्षेत्र (CRZ) के प्रकार:

CRZ क्षेत्र को पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 के तहत विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

- CRZ-I:** पारिस्थितिकी दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र, जैसे मैंग्रोव, प्रवाल भित्तियाँ, रेत के टीले।
 - CRZ-IA:** संवेदनशील क्षेत्र (मैंग्रोव, नमक के टीले)।
 - CRZ-IB:** अंतरज्वारीय क्षेत्र, जो निम्न ज्वार रेखा और उच्च ज्वार रेखा के बीच स्थित है।
- CRZ-II:** शहरी क्षेत्रों में विकसित भूमि, जो तटरेखा के निकट या नगरपालिका सीमाओं के भीतर आती है।
- CRZ-III:** ग्रामीण क्षेत्र, जिन्हें आबादी घनत्व के आधार पर वर्गीकृत किया गया है।
 - CRZ-III A:** 2161 से अधिक जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र। इन क्षेत्रों में HTL (High Tide Line) से 50 मीटर तक के क्षेत्र को NDZ के रूप में चिह्नित किया जाएगा।
 - CRZ-III B:** 2161 से कम जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र। इनमें HTL से 200 मीटर तक का क्षेत्र NDZ के रूप में निर्धारित होगा।
- CRZ-IV:** जल क्षेत्र, जिसमें समुद्री क्षेत्र शामिल हैं।
 - CRZ-IVA:** समुद्री जल क्षेत्र।
 - CRZ-IVB:** स्थानीय समुद्री जल क्षेत्र।

हाइड्रोजेल: दवा वितरण में नवाचार का स्मार्ट पदार्थ

Hydrogels: The smart material driving innovation in drug delivery

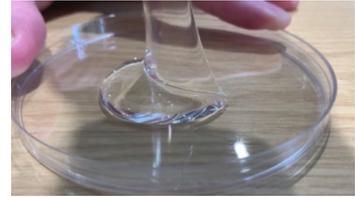
बोस इंस्टीट्यूट के रासायनिक विज्ञान विभाग के शोधकर्ताओं ने एक नया तरीका खोजा है, जिसमें **SARS-CoV-1 वायरस** के केवल पाँच अमीनो एसिड के छोटे प्रोटीन टुकड़ों का उपयोग कर **हाइड्रोजेल** बनाने में सफलता प्राप्त की है। यह हाइड्रोजेल प्रणाली **लक्षित दवा वितरण** को अधिक प्रभावी बनाने और **दुष्प्रभावों** को कम करने में सहायक हो सकती है।

हाइड्रोजेल क्या है?

हाइड्रोजेल एक त्रि-आयामी नेटवर्क है, जो जल-घुलनशील पॉलिमरों के क्रॉसलिंकिंग द्वारा तैयार किया गया है। इस सामग्री में निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं:

- यह बड़ी मात्रा में **पानी को अपने भीतर बनाए रख सकता** है, जिससे इसे लचीलापन और सूजन के गुण मिलते हैं।
- यह एक **"स्मार्ट" पदार्थ** है, जो अपने वातावरण के आधार पर अपनी संरचना को बदल सकता है। इसके बदलाव करने वाले कारकों में शामिल हैं:

- तापमान
- पीएच स्तर
- नमक की सांद्रता
- पानी की सांद्रता



इन गुणों के कारण, हाइड्रोजेल का उपयोग दवा वितरण, ऊतक इंजीनियरिंग और चिकित्सा अनुप्रयोगों में तेजी से बढ़ रहा है।

SARS क्या है?

गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम (SARS) एक वायरल श्वसन रोग है, जो **SARS-CoV-1 वायरस** के कारण होता है। यह एक संक्रामक रोग है, जो मुख्य रूप से निम्नलिखित तरीकों से फैलता है:

- यह वायरस **लार की छोटी बूंदों** के माध्यम से वायुजनित होता है, जैसे सर्दी-जुकाम और इन्फ्लूएंजा।
- यह **संक्रमित सतहों** के संपर्क से भी अप्रत्यक्ष रूप से फैल सकता है।

SARS के लक्षण:

- तेज बुखार
- ठंड लगना
- सिरदर्द
- शरीर में दर्द

उपचार:

वर्तमान में **SARS के लिए कोई विशिष्ट उपचार** उपलब्ध नहीं है, इसलिए इसका उपचार लक्षणों के आधार पर किया जाता है और रोगियों की देखभाल में सावधानी बरती जाती है।



आयरन बीम Iron Beam

आयरन बीम इजरायल द्वारा विकसित एक उन्नत लेजर-आधारित मिसाइल रक्षा प्रणाली है, जिसका उद्देश्य तेज गति से आने वाले प्रक्षेपास्त्रों, रॉकेटों और ड्रोन को नष्ट करना है। इसे **राफेल एडवांस्ड डिफेंस सिस्टम्स** द्वारा निर्मित किया गया है, और इसे **मैगन या लाइट शील्ड** के नाम से भी जाना जाता है। आयरन बीम एक **100 किलोवाट श्रेणी की उच्च ऊर्जा लेजर हथियार प्रणाली (HELWS)** है और वायु रक्षा में निर्देशित-ऊर्जा हथियार प्रणाली की पहली परिचालन प्रणाली बनने की दिशा में अग्रसर है।

आयरन बीम की विशेषताएँ:

- **परिचालन सीमा:** लगभग 7 किमी (4.3 मील)।
- **निर्देशित ऊर्जा प्रणाली:** लेजर किरण के माध्यम से लक्ष्य पर हमला करता है, जिससे तुरंत प्रतिक्रिया और सटीकता मिलती है।
- **निर्माण वर्ष:** आयरन बीम को पहली बार 2014 में प्रस्तुत किया गया था और एक वर्ष के भीतर इसे पूरी तरह से परिचालन में लाने की योजना है।

लाभ:

1. **असीमित गोला-बारुद:** लेजर तकनीक के कारण, इसे केवल ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जिससे गोला-बारुद की कमी का सामना नहीं करना पड़ता और खर्च में बचत होती है।
2. **कम लागत:** पारंपरिक हथियारों की तुलना में, लेजर द्वारा हमले की लागत बहुत कम होती है।
3. **सहयोगी प्रणाली:** इसे इजरायल के *आयरन डोम* के पूरक के रूप में कार्य करने के लिए डिज़ाइन किया गया है और यह बहुस्तरीय रक्षा प्रणाली का हिस्सा बन सकता है।

नुकसान:

1. **मौसम पर निर्भरता:** घने बादल, बारिश, और उच्च नमी जैसी स्थितियों में इसकी प्रभावशीलता कम हो जाती है।
2. **सीधी दृष्टि की आवश्यकता:** यह प्रणाली तभी प्रभावी होती है जब सिस्टम और लक्ष्य के बीच में कोई रुकावट न हो।
3. **समय की सीमा:** लक्ष्य को नष्ट करने के लिए पर्याप्त ऊर्जा प्रदान करने में इसे लगभग पांच सेकंड का समय लगता है।

आयरन बीम इजरायल की रक्षा प्रणाली में एक नया और महत्वपूर्ण कदम है, जो तेजी से बदलते खतरों का सामना करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।



फर्स्ट इन द वर्ल्ड चैलेंज First in the World Challenge

ICMR की "फर्स्ट इन द वर्ल्ड चैलेंज" योजना भारतीय वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को जटिल स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान में अभिनव विचारों और नई तकनीकों का प्रस्ताव देने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसका उद्देश्य जैव-चिकित्सा क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर प्रभाव डालने वाले नवाचारों को बढ़ावा देना है, जिसमें नए टीके, दवाएं, निदान और स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियां शामिल हैं।

योजना के प्रमुख बिंदु:

1. **वित्तपोषण के मानदंड:** केवल अद्वितीय, अभूतपूर्व अनुसंधान और तकनीकी प्रगति के प्रस्तावों को ही इस योजना के तहत वित्तीय सहायता मिलेगी। साधारण सुधार या प्रक्रियात्मक बदलाव वाले प्रस्तावों को इस योजना में शामिल नहीं किया जाएगा।
2. **उच्च जोखिम, उच्च पुरस्कार दृष्टिकोण:** इस योजना में नवीन खोजों पर जोर दिया गया है, जिससे उच्च जोखिम लेने वाली परियोजनाओं को समर्थन मिलेगा, भले ही उनमें से कुछ सफल न हों।
3. **पात्रता:** प्रस्ताव व्यक्तिगत या टीम द्वारा किसी एकल या बहु-संस्थान से प्रस्तुत किए जा सकते हैं।
4. **चयन प्रक्रिया:** विशेषज्ञों, नवप्रवर्तकों, नीति निर्माताओं और जैवचिकित्सा वैज्ञानिकों का एक पैनल प्रस्तावों की समीक्षा करेगा।

स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में अन्य महत्वपूर्ण पहलें:

- **राष्ट्रीय चिकित्सा रजिस्टर (एनएमआर):** यह एक केंद्रीकृत डेटाबेस है, जिसमें भारत के सभी लाइसेंस प्राप्त एलोपैथिक डॉक्टरों का डेटा होता है। हालांकि, आधार से सत्यापन और जानकारी में त्रुटियों के कारण डॉक्टरों को पंजीकरण में दिक्कत आ रही है, जिसके समाधान की आवश्यकता है।
- **आयुष्मान भारत योजना:** यह दुनिया की सबसे बड़ी सरकार-समर्थित स्वास्थ्य बीमा योजना है, जिसका उद्देश्य करोड़ों भारतीयों को किफायती स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना है।
- **टेलीमेडिसिन और डिजिटल स्वास्थ्य:** भारत का टेलीमेडिसिन बाजार 31% की वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ रहा है, और इसे 2025 तक 5.4 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। इसके साथ ही, *राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य ब्लूप्रिंट* अगले 10 वर्षों में 200 बिलियन डॉलर से अधिक का आर्थिक मूल्य उत्पन्न कर सकता है।
- **मेडिकल वैल्यू ट्रेवल (एमवीटी):** भारत चिकित्सा पर्यटन में भी अग्रणी है और "हील इन इंडिया" पहल के तहत वैश्विक रोगियों को आकर्षित कर रहा है।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !



ANKIT AVASTHI

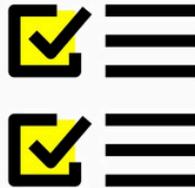


RRB NTPC

TEST SERIES

- ✓ 100+ Mock Test
- ✓ 78 Sectional Test
- ✓ 40+ years PYPs
- ✓ 60+ Current affairs

TEST



Only

99 *Per Year*

Buy Now



GA FOUNDATION

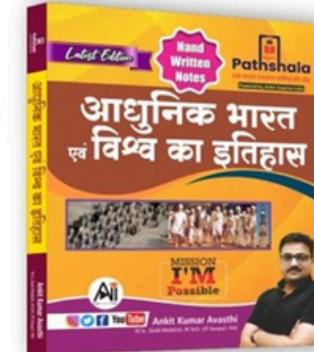
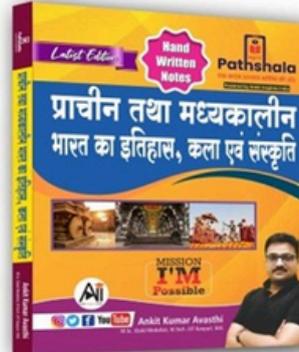
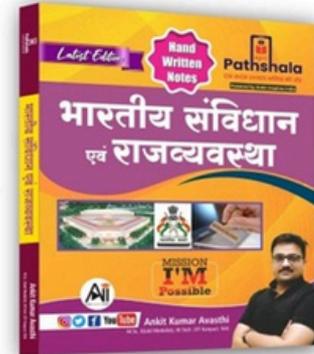
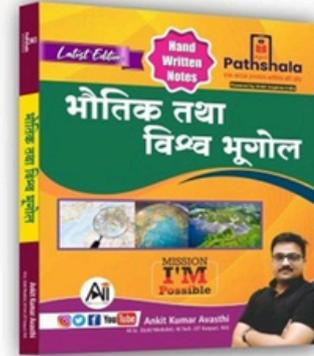
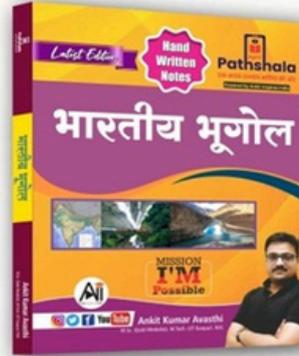
Hand Written
Notes


Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर


Ani
Ankit Inspires India

₹ **Only**
1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट



अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

 **7878158882**



APNI PATHSHALA

UPPSC, RO/ARO, BPSC, UP

TEST SERIES

UPPSC

(TEST SERIES)

- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

RO/ARO

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299/-
YEAR

BPSC

(TEST SERIES)

- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

299
YEAR

SSC

(TEST SERIES)

- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR

RPF

(TEST SERIES)

- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

99/-
YEAR



Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

▶ POLITY ▶ ECONOMICS
▶ HISTORY ▶ GEOGRAPHY

FOR ALL

LIVE DAILY LIVE CLASSES

WEEKLY TEST

CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)

LIVE DOUBT SESSIONS

DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs

4999/-



Apni Pathshala



7878158882



Apni.Pathshala



kaankit



AnkitAvasthiSir



Avasthiankit

ONLY POLITY



1499
RS

DAILY LIVE CLASSES

-  **WEEKLY TEST**
-  **CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)**
-  **LIVE DOUBT SESSIONS**
-  **DAILY PRACTISE PROBLEM**

Apni Pathshala



7878158882



Apni.Pathshala



kaankit



AnkitAvasthiSir



Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,
Stenographer (Grades C & D)



Only at

99/- Year

Enroll Now!

